Toppersnotes
Unleash the topper in you

हरियाणा पुलिस

कांस्टेबल

हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग (HSSC)

भाग - 1

इतिहास,भूगोल एवं राजव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास

1	प्रागैतिहासिक काल एवं परिचय	1
2	सिन्धु घाटी सभ्यता	2
3	वैदिक काल सभ्यता	5
4	6 वी शताब्दी ईसा पूर्व के धर्म सुधार आन्दोलन	9
5	महाजनपद एवं मगध का उत्थान	12
6	मौर्य साम्राज्य	14
7	मौर्योतर काल	17
8	गुप्त काल	19
9	गुप्तोत्तर काल (चोल पाण्ड्य पल्लव वंश)	23

मध्यकालीन भारत का इतिहास

1	मुस्लिम आक्रमण	28
2	सल्तनत काल	29
3	मुगल काल	36
4	विजय नगर साम्राज्य	43
5	धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आन्दोलन	45
6	मराठा उद्भव	48

आधुनिक भारत का इतिहास

1.	भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन	49
2.	अंग्रेज फ्रांसीसी सघर्ष	51
3.	बंगाल और अंग्रेज	51
4.	मराठा शक्ति का उत्कर्ष	52
5.	अंग्रेजों की संधियाँ एवं देशी रियासतों के प्रति नीति	54
6.	अंग्रेजों की भू राजस्व नीतियाँ	54
7.	आंग्ल मैसूर संघार्ष	55
8.	आंग्ल सिक्ख संघर्ष	56
9.	गर्वनर जनरल	57
10.	भारत के वायसराय	59
11.	1857 की क्रान्ति	61
12.	धर्म एवं समाज सुधार आन्दोलन	63
13.	राष्ट्रीय आन्दोलन एवं कांग्रेस (विभिन्न अधिनियम संगठन आन्दोलन, नेतृत्वकर्ता)	66
14.	भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन	79
15.	साम्यवादी आन्दोलन	81
16.	महत्वपूर्ण प्रेस एक्ट	82
17.	प्रमुख व्यक्तित्व	82

भारतीय राजव्यवस्था

1.	संविधान का विकास एवं परिचय	84
2.	उद्देशिका एवं प्रस्ताव	87
3.	संघ एवं राज्य क्षेत्र	91
4.	मूल अधिकार	92
5.	राज्य के नीति निर्देशक तत्व	96
6.	मूल कर्तव्य	97
7.	संघ (राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, संसद, समितियां)	97
8.	न्यायिक व्यवस्था (उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय)	109
9.	राज्य (राज्यपाल, मुख्यमंत्री, विधान परिषद)	111
10.	आपातकालीन उपबन्ध	115
11.	संविधान संशोधन	120
12.	विविध सामान्य ज्ञान	122

भारतीय भूगोल

1.	भारत की स्थिति एवं विस्तार	157
2.	भारत के भौगोलिक (भौतिक) भू- भाग	162
3.	भारतीय मानसून	183
4.	भारत का अपवाह तन्त्र	193
5.	भारत की प्राकृतिक वनस्पति (जैव संरक्षण एवं जीव मंण्डल)	202

6.	भारत की मिट्टियां	217
7.	भारत की जलवायु	221
8.	भारत में खनिज संसाधन	238
9.	भारत के प्रमुख उद्योग	245
10.	भारत का परिवहन तन्त्र	247
11.	भारतीय कृषि एवं पशुपालन	255
12.	विविध सामान्य ज्ञान विश्व एवं भारत	268

इतिहास

- इतिहास शब्द ग्रीक अथवा यूनानी भाषा के शब्द हिस्टोरिया से बना है जिसका अर्थ होता है खोज अथवा छानबीन ।
- इतिहास का संबंध अतीत की उन घटनाओं से है जिनका हमारे पास लिखित एवं प्रमाणित तिथि उपलब्ध है ।
- ग्रीका विद्वान हैरोडोट्स ने इतिहास की प्रथम पुस्तक "हिस्टोरिका" लिखी ।
- हैरोडोट्स को इतिहास का पिता कहा जाता है ।
- इतिहास को जानने के लिए निम्न स्त्रोत है ।

1. पुरातात्विक स्त्रोत
2. साहित्य स्त्रोत
3. विदेशी यात्रियों का यात्रा वृतांत

अध्ययन की दृष्टि से भारतीय इतिहास को हम निम्न प्रकार बांट सकते है ।

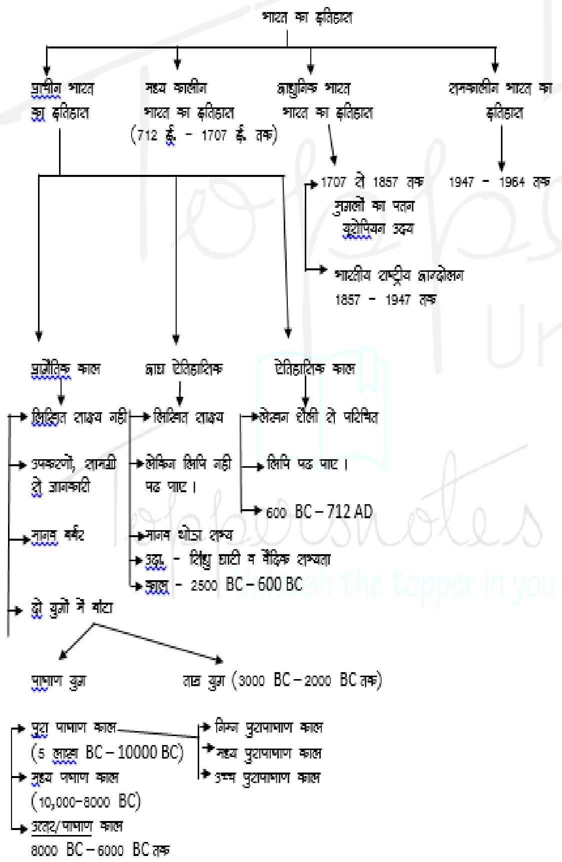

पुरापाषाण काल –

- कौर संस्कृति, फलक संस्कृति एवं ब्लैड संस्कृति का उदय ।
- आधुनिक मानव होमो सैपिनियंस का उदय ।
- मानव आग जलाना ।
- इस काल में चापर – चौपिंग संस्कृति का उदय, डी एन वाडिया ने खोज की , यह उत्तर भारतीय संस्कृति है ।
- दक्षिण भारत की संस्कृति हैण्ड – एक्स संस्कृति है इसकी खोज रॉबर्ट ब्रुस फुट ने की ।
- चापर–चौपिंग एवं हैण्ड ऐक्स संस्कृति (उत्तर एवं दक्षिण) मिलन स्थल चौतरान (जम्मू कश्मीर) है ।

प्रमुख स्थल –

भीम बेटका – शैला शील चित्रों के प्रसिद्ध
डीडवाना (राजस्थान)
– हथनौरा

मध्य पाषाण काल

- इस काल को माइक्रोलिथ काल कहते है । छोटे – छोटे पाषाण उपकरणों के कारण ।
- भारत में इस काल का जनक HCL क्लाईल ।
- मानव न इस काल में सर्वप्रर्थम पशु पालन करना सीखा ।
- पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य है । बागौर (राजस्थान) एवं आदमगढ (MP)
- इस मध्यपाषाण काल को संक्रमण काल कहा जाता हे ।
- मध्य पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल सराय नाहर यूपी है ।

उत्तर/नव पाषाण काल

- सर जॉन लुबाक ने नव पाषाण काल शब्द दिया ।
- गार्डन चाइल्ड ने इस काल को "नव पाषाणिक क्रांति" कहा ।
- ली मेंसियर ने उत्तर भारत में नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- नेविलियन फ्रेजर ने दक्षिण भारत से नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- मानव ने कृषि करना सीखा ।
- वृहद पैमाने पर पशुपालन एवं ग्रामीण संस्कृति के साक्ष्य मिले ।

प्रमुख स्थल –

1. मेहरगढ (पाक) – नव पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल
   8000 BC पूर्व कृषि के साथ साक्ष्य मिले ।
2. कोल्डी हवा – (यूपी) – 6000 वर्ष पूर्व चावल की खेती के साक्ष्य मिले ।
3. बुजहोम एवं गुफफकराल (J&K) बुजहोम से मानव के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य भी मिले है ।

नोट –

प्रागऐतिहासिक काल के जनक भारत में डा. प्राइम रोज थे । जिन्होंने लिंगसुगुर (कर्नाटक) से पाषाण कालीन उपकरण खोजे थे ।

नव पाषाण काल में दक्षिण भारत की प्रमुख फसल रागी थी ।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- परिचय
- विस्तार
- कालक्रम
- निवासी
- नगर नियोजन
- महत्वपूर्ण नगर
- लिपि
- पतन
- अन्य महत्वूर्ण तथ्य

परिचय

हडप्पा सभ्यता

- चार्ल्स मेसन – 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन ब्रंटन व विलियम ब्रंटन – 1856 ई हडप्पा नगर का सर्वे किया ।
- कनिंघम इस ओर ध्यान दिलाया कनिंघम को भारतीय पुरातात्विक विभाग का पितामह कहा जाता है ।
- 1921 में सर जॉन मार्शल के निर्देशन में दयाराम साहनी ने इसका उत्खनन किया ।
- सर्वप्रर्थम इस स्थल की खोज होने के कारण यह स्थल हडप्पा सभ्यता कहलाया ।
- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओ मे से एक है । उत्कृष्ट नगर व्यवस्था एवं जल निकासी व्यवस्था इसको विशिष्ट बनाती है ।

सिंधु घाटी सभ्यता –

- 1922 में रखाल दास बर्नजी ने इस मोहनजोदडो की खोज की ।
- इस सभ्यता के स्थल सिंधु एवं उसकी सहायक नदियों के किनारे थे । अतः इस घाटी का नाम सिंधु घाटी सभ्यात पडा ।

सरस्वती नदी घाटी सभ्यता –

- आजादी के बाद खोजे गए सर्वाधिक स्थल इस नदी क्षेत्र में है । अतः इसका नाम सरस्वती नदी घाटी सभ्यता भी कहा जाने लगा है ।

कास्य युगीन सभ्यता –

- उत्खनन में कंस्य के बर्तन या उपकरण अधिक मिले ।

नगरीय सभ्यता –

- सिंधु घाटी सभ्यता एक विस्तृत एवं समृद्ध नगरीय सभ्यता है । यहां बडे – बडे नगरों का उदय हुआ था ।

विस्तार –

- अफगानिस्तान
- पाकिस्तान
- भारत

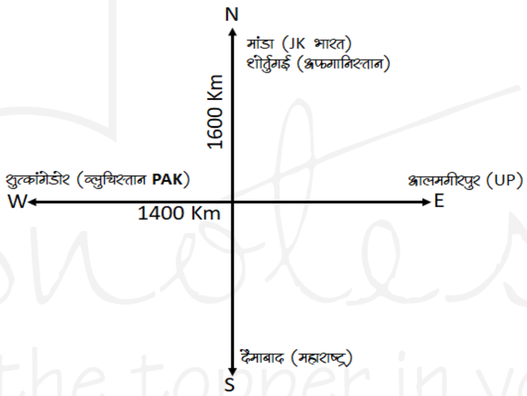

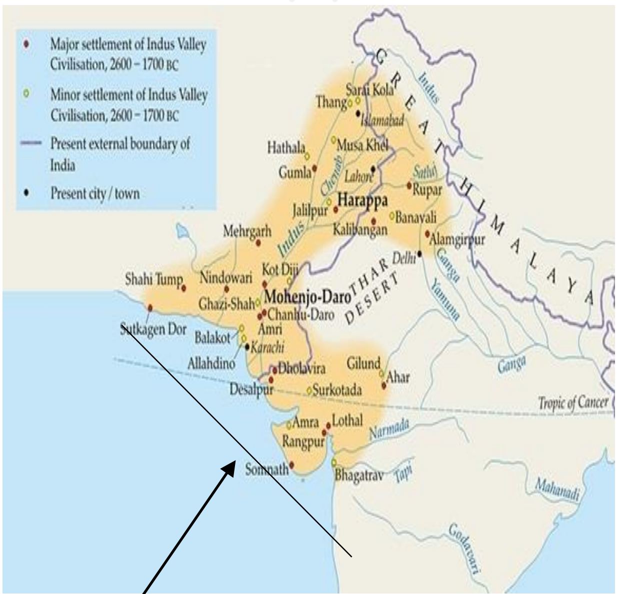

1300 किमी समुद्री सीमा

नोट –

- अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के मात्र दो स्थल थे । सार्तगोई एवं मुंडीगॉक है ।
- सार्तगोई से नहरों द्वारा सिंचाई के साक्ष्य मिले है ।
- सिंधु घाटी सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया के सभ्यता से 12 गुना बडी थी । जबकि मिश्र की सभ्यता से 20 गुना बडी थी ।
- आजादी से पूर्व खोजे समस्त स्थल पाकिस्तान में चले गये । भारत में केवल दो स्थल रहे, रंगपुर (गुजरात) और कोटला निहंगखां (रोपड पंजाब)
- भारत का सबसे बडा स्थल राखी गढ (हरियाणा) है, दूसरा बडा स्थल धौला वीरा (गुजरात) है ।
- पिग्गट ने हडप्पा एवं मोहनजोदडो को सिन्धु सभ्यता की जुँडवा राजधानी बताया है ।
- बडे नगर (पाकिस्तान)
  गनेडीवाल
  हडप्पा
  मोहनजोदडों

कालक्रम –

जॉन मार्शल – 3250 BC – 2750BC
माधोस्वरूप वत्स – 3500 BC – 2700 BC
रेडियो कार्बन पद्धति – 2300 BC – 1750 BC
एनसीआरटी – 2500 BC – 1750 BC
फेयर सर्विस – 2000 BC – 1500 BC
अर्नेस्ट मैके – 2800 BC – 2500 BC

निवासी –

यहां से प्राप्त कंकालों के अधार पर चार प्रजातियों में बांटा जा सकता है ।

1. भूमध्य सागरीय
2. अल्पाईन
3. मंगोलायड
4. प्रोटो आस्ट्रालायड

सर्वाधिक प्रजाति भूमध्य सागरीय प्रजाति मिली है ।

नगर नियोजन –

- नगर दो भागों में विभाजित – पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग । पश्चिमी भाग दुर्ग था, पूर्वी भाग सामान्य नगर था ।
- पश्चिमी भाग में प्रशासनिक लोग रहते थे । तथापूर्वी भाग में जनसामान्य लोग रहते थे ।
- सिंधु घाटी सभ्यता में पक्की ईटों के मकान है ।
- सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर परकोटे युक्त होते थे ।
- घरों के दरवाजे मुख्य सडक की तरफ न खुलकर पीछे की तरफ खुलते थे । केवल लोथल में मुख्य सडक की तरफ घरों के दरवाजे खुलते थे ।
- कालीबंगा दोहरे परकोटे युक्त है । जबकि चन्हुदडो में कोई परकोटा नही ।
- धोलाबीरा तीन भागों में विभक्त है । पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यमा ।
- लोथल एवं सुरकोटडा का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग दोनो ही एक ही परकोटे से घिरे हुए है ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 10 मीटर (मोहनजोदडो) की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था ।

कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।
ईंट का आकार – 1 : 2 : 4

जल निकासी हेतु पक्की ईटों की नालियां होती थी । विश्व की किसी अन्य सभ्यता में पक्की नालियों के साक्ष्य नही मिलते थे ।

प्रमुख नगर

1. हडप्पाः –

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब – शाहीवाल जिले मे) रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता – दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते हैं ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते है ।
- टीले पर निर्मित – व्हीलर ने "माउण्ट A – B" कहा
- शंख का बना बैल 18 वर्ताकार चबूतरे मिले हैं ।
- यहां से सर्वाधिक अभिलेख युक्त मुहरें मिली है ।
- 6 – 6 की पंक्ति में कुल 12 कमरों वाला आवास स्थल मिला है ।
- एक स्त्री के गर्भ से निकलता हुआ पौधा की मृणमूर्ति मिली है । सम्भवतः उर्वरता की देवी होगी ।

2. मोहनजोदडो : –

स्थिति = लरकाना (सिन्ध, PAK)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी

मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार -
 (a) 11.88 × 7.01 × 2.43 मीटर
 (b) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?
 (c) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता की सबसे बडी इमारत है । ल. 45.71×15.23 मीटर चौडी है ।
(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य
(iv) सूती कपडे के साक्ष्य
(V) हाथी का कपालखण्ड
(vi) कांसा की नर्तकी की मूर्ति मिली है ।
(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है
 (a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।
(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।
(ix)योगी की मूर्ति मिली है ।
(x) आद्य शिव की मूर्ति मिली है ।
(xi)बांध से पतन के साक्ष्य मिलते है ।
(xii)सर्वाधिक मुहरें सिंधु घाटी सभ्यता के यहां मिलती है ।

3. लोथल :-
 स्थिति = गुजरात
 - भोगवा नदी के किनारे
 उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)
 → यह एक व्यापारिक नगर था ।
(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है
 (a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
(iii) चावल के साक्ष्य
(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है
(v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
(vi) चक्की के दो पाट
(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते है (एकमात्र)
(viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. सुरकोटडा / सुरकोटदा: -
 स्थिति = गुजरात
 (i) घोडे की हड्डियाँ
 - सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. रोजदी (गुजरात)
 - हाथी के साक्ष्य

6. रोपड (PB)
 मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

7. धौलावीरा
 गुजरात - कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)
 उत्खननकर्त्ता - रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)
- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते है (खेल का मैदान)

8. चन्हुदडों
 उत्खननकर्त्ता - एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) - अर्नेस्ट मैके
 - मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
 - औद्योगिक नगर
 - झाकर एवं झुकर संस्कृति के साक्ष्य मिलते हैं ।
 - कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के पद चिन्ह है ।
 - एक सौन्दर्य पेटिका मिली है । जिसमें एक लिपिस्टिक है ।

कालीबंगा:-
 अवस्थिति- हनुमानगढ
 नदी-घग्घर/सरस्वती/दृषद्वती/चौतांग
 उत्खननकर्ता- अमलानन्द घोष (1952)अन्य सहयोगी- बी. बी. लाल बी. के. थापर
 जे. पी. जोशी एम. डी. खरे
 शाब्दिक अर्थ- काली चुडिया (पंजाबी भाषा का शब्द)
 उपनाम- दीन हीन बस्ती- कच्ची ईंटों के मकान ।

सामग्री:-
→ सात अग्नि वेदिकाएँ एवं हवन कुण्ड मिले है, संभवत धार्मिक यज्ञानुष्ठान का प्रचलन रहा होगा ।

→ युग्मित शवाधान प्राप्त हुए है संभवत सती प्रथा का प्रचलन रहा होगा ।

→ एक मानव कपाल खण्ड मिला है, जिसे मस्तिष्क शोधन बीमारी तथा शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है।

→ जूते हुए खेत के साक्ष्य मिलते है (एकमात्र स्थान) एक साथ दो फसले, उगाया करते थे, जौ एवं सरसों ।

→ मकान कच्ची ईटों के थे बल्लियो की छत होती थी ।

→ जल निकाली हेतु लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले है अर्थात सुदृढ जल निकासी व्यवस्था नही थी ।

→ ईटों को धूप से पकाया जाता था ।

→ वृताकार चबूतरे एवं बेलनाकार मुदरे (मैसोपोटामिया) मिली है ।

→ लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले है जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खीचीं गई है ।

→ यहां से एक खिलौना गाडी एवं पंख फैलाए बगुले की मूर्ति मिली है।

→ यहां से ऊँट के अस्थि अवशेष मिले है।

→ यहां का नगर अन्य हडप्पा स्थलों की तरह ही है, लेकिन यहां गढी एवं नगर दोनों दोहरे परकोटे युक्त है।

→ यहां उत्खनन में पांच स्तर प्राप्त हुए है प्रथम दो स्तर प्राक हडप्पा कालीन है । अन्य तीन स्तर समकालीन हडप्पा है ।

→ यहां प्राचीनतम भूकम्प के साक्ष्य प्राप्त होते है ।

→ इतिहासकार दशरथ शर्मा के अनुसार यह हडप्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी है ।

→ यहां एक कब्रिस्तान मिला है जिसे यहां के लोगों की शवाधान पद्धति की जानकारी भी मिलती है।

→ अन्य सामग्री:- मिट्टी के बर्तन, काँच के मनके, चुडियाँ, औजार, तौल के बाट आदिः

→ 1985-86 मे भारत सरकार ने यहाँ एक संग्रहालय बनवाया है।

नोटः- कालीबंगा को सर्वप्रथम किसी ने देखा वह एल. पी. टेस्सी - टोरी थे, जिन्होने राजस्थान मे चारण साहित्य पर शोध किया था ।

हडप्पा लिपि

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था
- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव-चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे ।
- मछली का प्रयोग Max तथा “U” आकार भी अधिक

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल - बाढ
- लोम्बिरिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

- कपास का उत्पादन सर्वप्रथम सिंधुवासियों ने किया ।
- सारगोन अभिलेख में सिंधु वासियों को मेलुहा (नाविको का देश) कहा गया है ।
- सिंधु वासियों का प्रिय पशु कुबड वाला बैल था ।
- दूसरा मुख्य पशु एक सींग वाला गेंडा था ।
- मातृ सत्तात्मक वाला समाज था ।
- सर्वाधिक मूर्तियां मातृ देवी की मिली है ।
- प्राकृतिक बहुदेव वाद में विश्वास करते थे ।
- मृत्यु के बाद भी जीवन में विश्वास करते थे ।
- लिंग एवं योनि की पूजा करते थे ।
- योग से परिचित थे ।
- कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था ।
- व्यापार वाणिज्य उन्नत अवस्था मे था ।
- व्यापार वस्तु विनिमय से होता था ।
- सिंधुवासी घोडा, गाय, शेर और ऊंट से परिचित नही थे ।
- सिंधु वासी लोहे से परिचित नही थे ।

वैदिक काल (साहित्य)

1500 - 600 BC

इस काल को हम दो भागों में बांट सकते है ।

1. ऋग्वैदिक काल (1500 BC – 1000 BC)
2. उत्तरवैदिक काल (1000 BC – 600 BC)

परिचय -

वैदिक सभ्यता आर्यो द्वारा बसाई गई सभ्यता है । इस काल का इतिहास इस काल में लिखे गए साहित्य पर आधारित है । इस साहित्य को वैदिक साहत्य / श्रव्य साहित्य भी कहा जाता है । जो निम्न है ।

1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद ⇒ वेदान्त

— वैदिक साहित्य

(1) वेदांग
(2) धर्मशास्त्र
(3) महाकाव्य
(4) पुराण
(5) स्मृतियाँ

— वैदिक साहित्य का अंग नहीं है।

वेद –

- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया।
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरूषेय माना जाता है
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते है।
- वेद 4 है –

1. ऋग्वेद –

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580(10600) मन्त्र है।
- पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोडे गए है।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है।
- तीसरे मण्डल मे गायत्री मन्त्र का उल्लेख मिलता है।
  - गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की।
  - गायत्री मंत्र सवितृ / सावितृ (सूर्य) को समर्पित है।
- सातवें मण्डल मे दशराज्ञ/ दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है।

  भरत कबीला V/S 10 कबीले
  राजा = सुदास
  पुरोहित = वशिष्ठ पुरोहित = विश्वामित्र
- यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लडा गया था।
- आठवें मण्डल में घोसा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति, लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते है।
- 9वां मण्डल सोम को समर्पित है।
- सोम का निवास स्थान मुजवन्त पर्वत है।
- 10वें मण्डल के पुरूष सूक्त में शूद्र शब्द का उल्लेख / चारों वर्ण का उल्लेख मिलता है।
- 10वें मण्डल के नासदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद के मन्त्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण = होतृ
- उपवेद = आयुर्वेद

2. यजुर्वेद :–

- यह 2 भागों में है – (i) शुक्ल यजुर्वेद
  (ii) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है।
- इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है।
- मंत्र पढने वाले को "अध्वर्यु" कहा जाता है।
- यज्ञ – अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है।
- उपवेद – धनुर्वेद

3. सामवेद : –

- संगीत का प्राचीनतम स्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते है।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
- उपवेद = गन्धर्ववेद

4. अथर्ववेद :–

- अथर्व ऋषि तथा आंगीरस ऋषि – रचयिता
- अन्य नाम – अथर्वआंगीरस वेद
- इसमें काले जादू, टोने – टोटको व चिकित्सा का उल्लेख। औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र – मंत्र आदि।
- मंत्रो का उच्चारण करने वाला – ब्रह्म
- उपवेद – शिल्पवेद।

वेद एवं उनसे संबंधित उनके ब्राह्मणक, आरण्यक एवं उनषिद ग्रंथ

वेद	भाग	विषय	पुरोहित	ब्रह्मण्क	आरण्यक	उपनिष्द
ऋग्वेद	साकल बालखिल्य वास्कल	छन्द/प्रार्थनाएं	होता/होतृ	ऐतरैय	ऐतरैय कौशीतकी	एतरैय कौशील्की
यजुर्वेद	कृष्ण यजुर्वेद शुक्ल यजुर्वेद	उच्च स्वर में उचारित किये जाने वाले मंत्र	अध्नर्यु	शतपथ तैतरैय मां,ायन	तैतरैय मंत्रायन वृहदारण्यक	कठ, तैतरैय वृहदायण्यक नाराण्यणश्वर श्वेतस्श्वर, ईश
सामवेद	कौथूम, राणण्यम और जैनिय	संगीत, गायन	उदगाता	पंचविष, षडविच जैमीनी	जैमीनी छन्दोग्य	केन जैमीनी छन्दोग्य
अथर्ववेद	शौनक,पीलाद	भौतिकवादी जादू, टोना लौकिक विधि विधान	ब्रहमा	गोपथ	-	प्रश्न, मुण्डक, मांडुक्य

मुण्डकोपनिषद से सत्यमेव जयते लिया गया है ।
प्रथम तीन वेदों को वेदत्रय कहा जाता है ।

सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है ।
उननिषद को वेदांग कहते है ।

वेदांग -

वेदों के सरलीकरण हेतु इनका निर्माण किया गया । यह वैदिक साहित्य का हिस्सा नही है । इसके छह भाग है -

1. शिक्षा - इसे वेदों की नासिका कहा जाता है ।
2. ज्योतिष - इसे वेदों की आंख कहा जाता है ।
3. व्याकरण - इसे वेदों का मुख कहा जाता है ।
4. छनद - इसे वेदों का पैर कहा जाता है ।
5. निरूक्त - इसे वेदों का कान कहा जाता है ।
6. कल्प - इसे वेदों की हाथ कहा जाता है ।

कल्प के अंतर्गत शुल्व सूत्र ज्यामिति की सबसे प्राचीन पुस्तक है ।

आर्यो का निवास:-

- आर्यो के निवास के बारे में विभिन्न मत प्रचलित है ।
- बाल गंगाधर तिलक के अनुसार आर्यो का मूल निवास उत्तरी ध्रुव है ।
- दयानंद सरस्वती के अनुसार तिब्बत मूल के आर्य है ।

पुराण - संख्या - 18
ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया

- मत्स्य पुराण - सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण - मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण - गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण - देवी महात्मय - (इसका भाग दुर्गासप्तशती) महामृत्युंजय मंत्र

स्मृति साहित्यः -

मनुस्मृतिः - प्राचीनतम स्मृति

- इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है
- जर्मन दार्शनिक नीत्शे कहता है ।"बाइबिल को जला दो, मनुस्मृति को अपनाओ"
- टीकाकार = भारूची

डा. पैनका ने जर्मनी को मूल स्थान बताया ।
मेक्स मूलर के अनुसार आर्य मध्य एशिया (बैक्टिरिया) है ।
आर्यो के उत्पति के संबंधित हाल ही में राखीगढ में उत्खनन से भी आर्यो की मूल उत्पति के संबंध मे पता नही लग पाया ।

सिंधु वासियों का राखीगढ से जो डीएनए मिला है । वह डीएनए उत्तर भारतीयों एवं दक्षिण भारतीयों में भी पाया गया है ।

ऋग्ववैद काल के अन्य महत्वपूर्ण तथ्य –

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है ।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी । (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व सरयू का उल्लेख 1 – 1 बार
- यमुना का उल्लेख 3 बार
- "भुजवन्त" नामक पहाडी चोटी का उल्लेख – जो कि हिमालय है ।
- ऋग्ववैद में वर्तमान की कई नदियों का उल्लेख मिलता है ।

वर्तमान नाम	ऋग्ववैदिक नाम
सिंधु	सिंध
झेलम	वितस्तता
रावी	परूषणी
व्यास	विपासा
सतलज	सतुद्री
चीनाब	अष्किीनी
सरस्वती	सरस्वती
गोमल	गोमती
स्वात	स्वास्तु
कुर्रम	कुर्मु
काबुल	कुम्भा

नोट– गोमल, स्वात, कुर्रम, काबुल अफगानिस्तान की नदियां है ।
ऋग्ववैद कालीन प्रशासन का मुखिया राजा होता था ।
राजा के सहयोग हेतु तीन संस्थाओं का उल्लेख मिलता है ।
यहां प्रशासन खंड स्तरीय होता है । जन सबसे बडी इकाई थी ।
ऋग्वेद में उल्लेख 275 बार । जिसका प्रमुख राजा होता था ।
विष का उल्लेख 70 बार ।
ग्राम का उल्लेख 13 बार ।

1. सभा – ऋग्ववैद में आठ बार उल्लेख, कुलीन लोगों की संस्था थी ।
2. समिति – ऋग्ववेद में नौ बार उल्लेख जनसामान्य की संस्था थी ।
3. विदथ – यह सबसे प्राचीन संस्था है । 122 बार उल्लेख मिलता है । कार्यशैली की जानकारी नही मिलती ।

- आर्यो का प्रिय पशु घोडा था ।
- वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित थी ।
- तीन वार्णो का उल्लेख मिलता है ।
- महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे । घोषा, सिक्ता, अपाला, विषपला (योद्धा), नामक महिला विदुषियों को जिक्र मिलता है ।

ऋग्ववैद काल में निम्न प्रमुख देवता थे ।

1. इंद्र – ऋग्ववैद में 250 बार उल्लेख । इसे पुरंदर कहा गया है ।
2. वरूण – ऋग्ववैद में 30 बार उल्लेख । ऋत का देवता है ।
3. अग्नि – ऋग्ववैद मे 200 बार उल्लेख ।

आर्यो की अर्थव्यवस्था पशुपालन आधारित थी ।
युद्ध गायों के लिए होते थे ।

उत्तरवैदिक काल – 1000 – 600 BC

- महत्वपूर्ण स्त्रोत – यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् व आरण्यक
- आर्य संस्कृति के प्रसार और विकास, उत्कर्ष, विभिन्नीकरण का युग
- लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरूआत । ("चित्रित धूसर मृदभाण्ड")

राजनैतिक जीवन – राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था :–

- राजा का पद वंशानुगत हो गया था ।
- ऐतरेय ब्राह्मण मे राजा की विभिन्न उपाधियों का वर्णन मिलता है ।
  स्वराट, विराट, एकराट, सम्राट
- राजा की सहायता हेतु 12 रत्निन् होते थे ।
- राजा यज्ञों का आयोजन करवाता था ।

(i) अश्वमेध यज्ञ – यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था । 3 दिन तक होता
(ii) राजसूय यज्ञ – राज्याभिषेक के समय किया जाता था इस दिन राजा हल चलाता था । अपने रत्निनों का निमंत्रण स्वीकार कर, उनके घर भोजन करने जाता था ।
(iii) वाजपेयी यज्ञ – रथ दौड का आयोजन करवाते थे राजा हिस्सा लेता था व हमेशा जीतता था ।

- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- ऋग्वैदिक काल मे राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर, अब अनिवार्य हो गया, जिसे 'बली' कहा जाता था ।(1/16वाँ भाग)
- विद्थ का उल्लेख नहीं मिलता ।

- सभा, एवं समिति का प्रभाव कम हो गया था ।
- अथर्ववेद – सभा व समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है ।
- राजा की "दैवीय उत्पति का सिद्धान्त" सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण मे मिलता है ।

आर्थिक जीवन :-

- कृषि का विकास हो चुका था ।
- अथर्ववेद मे "पृथवेन्यु" को कृषि धरती पर लाने का श्रेय जाता है ।
- अथर्ववेद मे टिड्डियों का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि के सभी प्रकारों (जुताई,बुआई,कटाई) का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण की काठक संहिता मे (24 बैलों द्वारा खिंचे जाने वाले) हल का वर्णन मिलता है ।
- गेहूँ एवं जौ प्रमुख फसले थी ।
- पशुपालन भी होता था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- विनिमय मे गाय व निस्क का प्रयोग होता था । निस्क – सोने का आभूषण जो गले मे पहनते थे
- अधिशेष उत्पादन पर अधिकार को लेकर ब्राह्मणों व क्षत्रियों मे संघर्ष हुआ । अंततः ब्राह्मणों को प्रतीकात्मक श्रेष्ठता प्रदान की गयी एवं अधिशेष उत्पादन पर क्षत्रियों का अधिकार हो गया ।
- कृषि मे लौह निर्मित उपकरणों का प्रयोग (अन्तरजीखेडा से साक्ष्य)
- समुद्र का ज्ञान हो गया था । साहित्य मे पश्चिमी तथा पूर्वी दोनो प्रकार के समुद्रों को वर्णन मिलता है । व्यापार व वाणिज्य का संकेत
- वस्त्र निर्माण और धातु शिल्प (धातु गलाने का काम) उद्योग बडे पैमाने पर ।

सामाजिक जीवन :-

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार
- चार वर्णों मे समाज विभक्त हो गया था । किन्तु अस्पृश्यता का अभाव था ।
- ब्राह्मणों को 'अदायी' कहा जाता था । आरम्भ के 3 वर्ग द्विज कहलाते थे ।
  (जनेऊ धारण करते है) उपनयन संस्कार होता था ।
  द्विज – दो बार जन्म लेने वाला
- क्षुद्रो को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था ।
- महिलाओं की स्थिति मे गिरावट आयी । (वृहदारण्य उपनिषद मे याज्ञवल्कय एवं गार्गी का संवाद मिलता है ।)
- अथर्ववेद मे पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है ।
- ऐतरेय ब्राह्मण में भी पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है । (पुत्री – कृपण कहा)
- मैत्रायणी संहिता मे भी पुत्री को शराब एवं जुआ की तरह बुराई बताया है ।
- महिलाओ को शिक्षा का अधिकार था । EX – गार्गी, मैत्रेयी, वेदवती
- सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का प्रचलन नही था ।

धार्मिक स्थिति

- प्रमुख देवता – ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।
  पाँच प्रकार के यज्ञ होते थे (पंचयज्ञ)।
  (i) ब्रह्म यज्ञ
  (ii) देव यज्ञ
  (iii) अतिथि यज्ञ
  (iv) पितृ यज्ञ
  (v) भूत यज्ञ

- ब्रह्म यज्ञ को "ऋषि यज्ञ", अतिथि यज्ञ को "मनुष्य यज्ञ" भी कहते थे । (भूत यज्ञ – प्राणी जगत् व प्रकृति के प्रति कृतज्ञता)

3 ऋण –
(i) ऋषि ऋण
(ii) देव ऋण
(iii) पितृ ऋण

- ब्राह्मणों के एक वर्ग ने इस जटिल कर्मकाण्डिय व्यवस्था का विरोध – किया एवं ज्ञान पर विशेष बल दिया ।

बौद्ध धर्म

संस्थापक – गौतम बुद्ध

जन्म	– 563 B. C.
पिता	– शुद्धोधन
माता	– महामाया
मौसी	– प्रजापति गौतमी
पत्नी	– यशोधरा
पुत्र	– राहुल
जन्मस्थान	– लुम्बिनी (कपिलवस्तु)
आधुनिक	– रुम्मिन देई, नेपाल
वंश	– इक्षवाकु शाक्य क्षत्रिय
गौत्र	– गौतम

- कौण्डिनय ब्राह्मण ने भविष्यवाणी की कि सिद्धार्थ बडा होकर चक्रवर्ती सम्राट या साधु बनेगा ।
- 4 घटनाएँ जिन्होने बुद्ध का जीवन बदल दिया –

(i) वृद्ध व्यक्ति
(ii) बीमार व्यक्ति
(iii) मृत व्यक्ति
(iv) सन्यासी

- 29 वर्ष की अवस्था मे गृहत्याग किया यह घटना -- ''महाभिनिष्क्रमण'' कहलाती है ।
- 'आलार कलाम' के आश्रम मे रहकर सांख्य दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया ।
- ''रामपुत्र' – दूसरे गुरू । (रूद्रक रामपुत्र)
- कौडिन्य आदि ब्राह्मणों के साथ कठिन तपस्या की ।
- ''सुजाता'' नामक लडकी ने बुद्ध को खीर खिलाई ।
- बुद्ध ने ''मध्यम मार्ग'' का प्रतिपादन किया ।
- बुद्ध उरूवेला चले गये एवं वहाँ निरंजना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।
- अब सिद्धार्थ ''गौतम बुद्ध व शाक्य मुनि'' के नाम से प्रसिद्ध हुये ।
- सारनाथ में कौडिन्य एवं अन्य ब्राह्मणों को पहला उपदेश दिया इसे ''धर्मचक्र प्रवर्तन'' कहते है
- सर्वाधिक उपदेश – श्रावस्ती मे दिये ।
- आनन्द प्रिय शिष्य तथा उपालि प्रमुख शिष्य था ।
- आानन्द के कहने पर भगवान बुद्ध ने महिलाओं को संघ मे प्रवेश दिया । प्रजापति गौतमी – पहली 'भिक्षुणी'
- 483 B.C. मे बुद्ध की मृत्यु – खुशीनारा में (कुशीनारा) कुशीनगर
- भगवान बुद्ध के प्रतीक –
  1. हाथी/ सफेद हाथी – भगवान बुद्ध के गर्भस्थ होने का प्रतीक
  2. सांड/कमल – जन्म
  3. घोडा – गृहत्याग का प्रतीक
  4. बोधिवृक्ष/पीपल – ज्ञान का प्रतीक
  5. पद्चिन्ह – निर्वाण का प्रतीक
  6. स्तूप – मृत्यु का प्रतीक
  7. महाभिनिष्क्रमण – 29 वर्ष की अवस्था में भगवान बुद्ध ने गृहत्याग किया
  8. सम्बोधि – 35 वर्ष की अवस्था मे गौतम बुद्ध को बोधगया मे निरंजना नदी के तट पर पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।

ज्ञान/ दर्शन –

4 आर्य सत्य

(i) दुःख है ।
(ii) दुःख का कारण है । (प्रतीत्य समुत्पाद)
(iii) दुःख निवारण है ।
(iv) दुःख निवारण का मार्ग है ।

➢ **अष्टांगिक मार्ग –**

1. सम्यक् दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाक्
4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्यक् आजीव
6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि

➢ **कार्य कारण/ कारणता सिद्धान्त – प्रतीत्य समुत्पाद :-**
(ऐसा होने पर –वैसा होना)

- दुःखो का कारण अविद्या को बताया है ।
- कर्म सिद्धान्त मे विश्वास रखते हैं ।
- पुनर्जन्म मे विश्वास रखते है ।
- अनात्मवादी होते हैं । आत्म की अमरता में विश्वास नहीं रखते है ।
- अनीश्वरवादी होते है । ईश्वर के प्रश्न पर बुद्ध मुस्करा देते थे ।
- क्षणिकवाद (अनित्यवादी) – इस जगत की सभी वस्तुऐं अनित्य एवं परिवर्तनशील हैं ।
- आम्रपाली (वैशाली) भी बौद्ध संघ मे सम्मिलित हो गयी थी ।

अनात्मवाद –

- भगवान बुद्ध नित्य आत्मा को स्वीकार नहीं करते

निर्वाण –

- निर्वाण का शाब्दिक अर्थ "दीपक/विज्ञान का बुझ जाना" होता है ।
- भगवान बुद्ध ने निर्वाण की अवस्था का उल्लेख नहीं किया है ।

❖ **बौद्ध धर्म की चार संगीति –**

समय	स्थान	शासक	अध्यक्ष
1. 483 B. C.	राजगृह	अजातशत्रु	महाकस्सप
2. 383 B. C.	वैशाली	कालाशोक	साबकमीर
3. 251 B. C.	पाटलीपुत्र	अशोक	मोग्गलीपुत तिस्स
4. 1st Cent.	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्क	अश्वघोष / वसुमित्र

(1) <u>प्रथम संगीति</u> – दो पुस्तके (ग्रन्थ) लिखी गई

(i) सुत पिटकः – भगवान बुद्ध का जीवन, उपदेश, शिक्षाएँ, तथा बौद्ध धर्म की जानकारी मिलती है। इसके खुद्दक निकाय में बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ (जातक) मिलती है । इसकी रचना आनन्द ने की थी ।

(ii) विनय पिटक – संघ के नियम तथा बौद्ध भिक्षुओ के आचार विचार (आचरण) का वर्णन मिलता है इसकी रचना उपाली ने की थी ।

(2) <u>द्वितीय संगीति</u> – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त हो गया ।

- स्थविर तथा महासंघिक – दो भागों मे विभक्त

(3) तृतीय संगीति – इसमे तीसरे पिटक – अभिधम्म पिटक की रचना की गई । इसमे "बौद्ध धर्म के दर्शन" का वर्णन है संयुक्त रूप से सुत – विनय – अभिधम्म पिटक को "त्रिपिटक" कहा जाता है अभिधम्म पिटक की रचना मोगलीपुत तीस्स ने की थी ।

(4) चतुर्थ संगीति – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त हो गया हीनयान (छोटी गाडी) एवं महायान (बडी गाडी) हीनयान एवं महायान भी कई शाखाओं में विभक्त हो गया ।

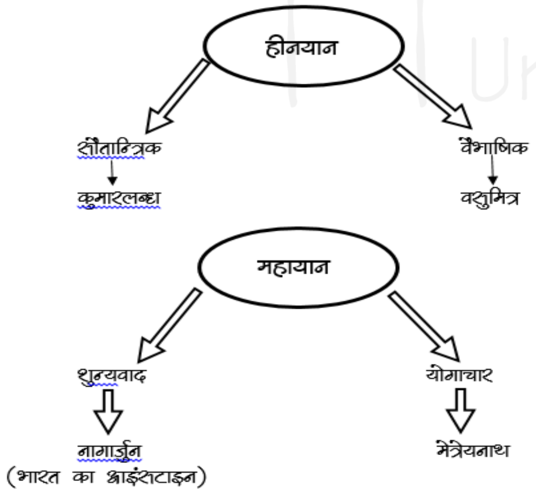

- अन्तिम लक्ष्य – निर्वाण = (अर्थ – बुझ जाना)
- मैत्रेय – भविष्य का बुद्ध
- बुद्ध ने पंचशील का सिद्धान्त दिया –
  (i) झूठ नही बोलना
  (ii) चोरी नहीं करना
  (iii) हिंसा नही करना
  (iv) नशा नहीं करना
  (v) व्यभिचार नही करना

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न –
बुद्ध, धम्म और संघ

शंकराचार्य को प्रच्छन्न / छद्म बुद्ध कहा जाता है ।
बौद्ध संग में प्रवेश उपसम्पदा कहलाती है ।
गृह त्यागना प्रवज्रा कहलाता है ।
सुतपिटक को बौद्ध धर्म का एन साइक्लोपिडिया कहा जाता है ।
बौद्ध धर्म का सबसे बडा स्तूप बोरो बदूर स्तूप इण्डोनेशिया में है ।

<u>जैन धर्म</u>

- संस्थापक – ऋषभदेव / आदिनाथ दोनों का वर्णन ऋग्वेद मे
- 21वें तीर्थकर – नेमीनाथ
- 22वें तीर्थकर – अरिष्टनेमी – (कृष्ण के समकालीन)
- 23वें तीर्थकर – पार्श्वनाथ

- महावीर स्वामी (24वें)

महावीर को निगठनाथपुत कहा जाता है ।
- जन्म – 540 B. C. भाई – नन्दीबर्मन
- स्थान – कुण्डग्राम
- मृत्यु – पावापुरी (बिहार)
- बचपन का नाम – वर्धमान
- पिता – सिद्धार्थ
- माता – त्रिशला
- पत्नी – यशोदा
- पुत्री – प्रियदर्शना दामाद – जामालि

- 30 वर्ष में गृहत्याग । वर्धमान ने रथ पर सवार होकर गाजे बाजे सहित घर छोडा ।
- 13 माह पश्चात् वस्त्र त्याग भद्रबाहु की पुस्तक कल्प सूत्र से जानकारी मिलती है
- 12 वर्ष की तपस्या के पश्चात् ज्ञान प्राप्ति ।
- जुम्बिकाग्राम मे रिजुपालिका/ऋजुपालिका नदी के किनारे पर साल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति
- प्रथम शिष्य – जामालि ।
- जमालि ने ही प्रथम विद्रोह किया ।
- आरम्भिक 11 शिष्यों को "गणधर" कहा जाता है ।
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर व जिन (विजेता) कहलाये ।
- इन्होने त्रिरत्न की अवधारणा दी
  (i) सम्यक् ज्ञान
  (ii) सम्यक् दर्शन
  (iii) सम्यक् चरित्र

- पंचव्रत – महाव्रत (भिक्षुओं के लिए)
  अणुव्रत (गृहस्थों के लिए)

- ज्ञान के 5 प्रकार बताये ।
  - (i) मति – पशुओं को भी यह ज्ञान होता है । इन्द्रियों जनित ज्ञान
  - (ii) श्रुति ज्ञान – श्रवण ज्ञान
  - (iii) अवधि ज्ञान – दिव्य ज्ञान
  - (iv) मनः पर्यय ज्ञान – दूसरे के मन को जान लेना
  - (v) कैवल्य ज्ञान – सर्वोच्च ज्ञान ।

- कर्म सिद्धान्त (कर्म फल) तथा पुनर्जन्म में विश्वास रखते है ।
- आत्मा को जीव कहते है ।
- आस्रव – पुद्गलो का जीव की तरफ प्रवाहित होना ।
- संवर – जीव की तरफ पुद्गलो के होने वाले प्रवाह का रूक जाना ।
- निर्जरा – जीव से चिपके हुए पुद्गलों का झड जाना

त्रिरत्न – सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र

अनेकान्तवाद :-

- यह जैन दर्शन का तत्वमीमांसीय सिद्धान्त है ।
- इस जगत में अनेक वस्तुएँ है एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण है ।

स्यादवाद :-

- यह जैन दर्शन का ज्ञान मीमांसीय सिद्धान्त है ।
- जैन दर्शन के अनुसार इस जगत में अनेक वस्तुएँ है एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण है ।
- हमारी बुद्धि न तो जगत की सभी वस्तुओं को पहचान सकती है एवं न ही एक वस्तु के सभी गुणों को पहचान सकती है, यह बुद्धि की सापेक्षता का सिद्धान्त है ।
- जैन धर्म में इसे सात जन्मान्ध के उदाहरण द्वारा समझाया गया है ।

1. जैन संगीति :-

समय	298 BC
शासक	चन्द्रगुप्त मौर्य
स्थान	पाटलिपुत्र
अध्यक्ष	स्थलबाहु व भद्रबाहु (स्थूलभद्र

- जैन धम्र दो भागों में विभक्त हो गया ।
- स्थलबाहु के अनुयायी-श्वेताम्बर (तेरापंथी)
- भद्रबाहु के अनुयायी – दिगम्बर (समैया)

2. जैन संगति 512 ई. वल्लभी (गुजरात)

देवार्धि क्षमा श्रमण

संथारा प्रथा :-

जब किसी व्यक्ति को लगता है कि वो मृत्यु के निकट है तो वह एकांतवास धारण कर लेता है और अन्न जल त्याग देता है । मौन व्रत धारण कर लेता है तथा अन्त में देहत्याग देता है ।

महाजनपद काल

- भारतीय इतिहास की दूसरी नगरीय क्रांति ।
- 16 महाजनपदों का उल्लेख बौद्धों के "अंगुतर निकाय" एवं जैनों के "भगवती सूत्र" से मिलता है
- भगवती सूत्र महावीर की जीवनी है ।

*मल्ल संघ एवं वज्जि संघ में गणतंत्र था ।
मल्ल संघ के अंतर्गत दो गणराज्य थे एवं वज्जि संघ के अंतर्गत आठ गणराज्य थे ।

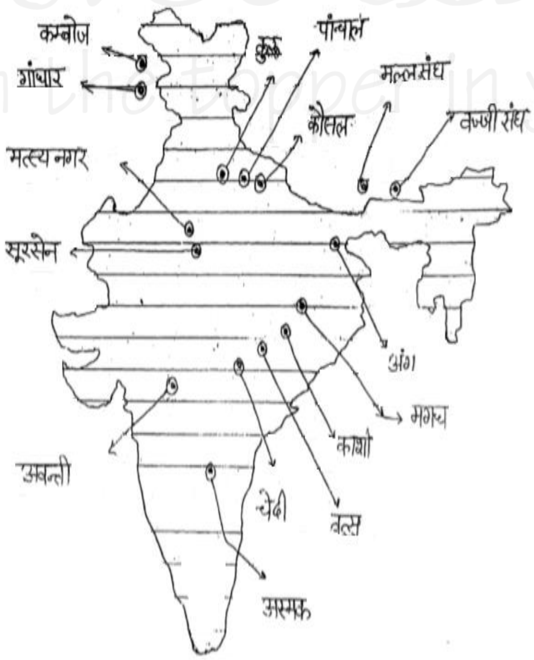

राज्य	राजधानी
1. कम्बोज	हाटक
2. गांधार	तक्षशिला
3. कुरू	इन्द्रप्रस्थ
4. पांचाल	अहिच्छत्रपुर
5. कोसल	श्रावस्ती (साकेत)
6. मल्ल संघ	कुशीनारा
7. वज्जी संघ	विदेह/वैशाली
8. अंग	चम्पा
9. मगध	राजग्रह, गिरीव्रज, पाटलीपुत्र
10.काशी	बनारस /वाराणसी
11.वत्स	कौशाम्बी
12.चैदी	शुक्तिमती
13.अस्मक	पोटली
14.अवन्ती	महिष्मती/मायुष्मती, उज्जैयनी (उज्जयिनी)
15.सूरसेन	मथुरा
16.मत्स्यनगर	विराट नगर

अस्मक एक मात्र महाजनपद था जो दक्षिण भारत में स्थित था।

मगध राज्य का इतिहास

हर्यक वंश (544-412 B.C.)

1. बिम्बिसार :-

- मत्स्य पुराण में इसे क्षत्रोजस कहा है।
- जैन साहित्य में - श्रौणिक/श्रैणिक
- कोसल के शासक प्रसेनजीत की बहन कोशला देवी से विवाह किया
- अंग के शासक चेटक की पुत्री चैल्लना से विवाह किया।
- मद्रदेश की राजकुमारी क्षेमा/खेमा से विवाह किया
- अंग प्रदेश को जीतकर अजातशत्रु को गवर्नर नियुक्त किया।
- चिकित्सक जीवक को अवन्ती के शासक चंड प्रद्योत के दरबार में भेजा।

2. अजातशत्रु :-

- कुणिक नाम से प्रसिद्ध
- मंत्री वस्सकार को फूट डालने के लिए वज्जी संघ भेजा तथा वैशाली का विलय मगध में किया
- रथमूसल एवं महाशिलाकंटक का प्रयोग इस युद्ध में किया।
- सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया।
- इसके शासन के 8 वें वर्ष में भगवान बुद्ध की मृत्यु।

3. उदायिन/उदयन :-

- सोन एवं गंगा नदी के किनारे कुसुमपुरा नगर बसाया जिसे पाटलीपुत्र कहते हैं।

शिशुनाग वंश :-

1. शिशुनागः-
   - वैशाली को राजधानी बनाया।

2. कालाशोक :-

- द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया।
- पाटलीपुत्र को पुनः राजधानी बनाया।

नन्द वंश :-

1. महापद्म नन्द :-

- इसे दूसरा "भार्गव" परशुराम कहते हैं। सर्वक्षत्रांतक - क्षत्रियों का नाश करने वाला कहते हैं।
- जैन धर्म को संरक्षण दिया।
- हाथीगुफा अभिलेख- इसके अनुसार इसने कलिंग को जीता। कलिंग में नहर का निर्माण करवाया। वहाँ से जिनसेन की मूर्ति लाया।
- पुराणों में नन्द वंश के शासकों को (शूद्र) कहा गया है।

2. धनानन्द :-

चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसकी हत्या कर दी। (322 B.C. में) सिकन्दर के समकालीन

विदेशी आक्रमण

फारस (ईरानी आक्रमण)

हखामनी साम्राज्य (वंश)

डेरियस (दारयबहु/दारा) :-

- भारत पर पहला विदेशी आक्रमण । गंधार कम्बो
- जानकारी के स्त्रोत :-
    - पर्सिपोलस अभिलेख
    - नक्श ए रूस्तम
    - बेहिस्तुन
- इसके पुत्र जरक्सीज (जरम्सीज) ने भारतीय तीरंदाजों की प्रशंसा की थी । (300 Moaie) सेना में शामिल किया ।

ग्रीक/यूनानी आक्रमण

1. **अलेक्जेण्डर/सिकन्दर**

पिता - फिलिप

गुरू - अरस्तु

माता - ओलम्पिया

- यह मकदूनिया/मेसीडोनिया का शासक था ।
- गांधार (तक्षशिला) के शासक आम्भी ने सिकन्दर के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया ।
- झेलम/वितस्ता/हाइडेस्पीज का युद्ध - 326 BC सिकन्दर बनाम पोरस (पुरू)

- पोरस का राज्य झेलम एवं चिनाब नदी के मध्य स्थित था ।
- पोरस पराजित हुआ
- सिकन्दर पोरस की बहादुरी से प्रभावित हुआ एवं उसे उसका राज्य वापस लौटा दिया ।
- सिकन्दर 19 महीने तक भारत में रूका ।

- सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी को पार करने से मना कर दिया ।
- सिकन्दर मंडनीस नामक दार्शनिक से प्रभावित हुआ

मौर्य वंश

- चाणक्य ने 1000 कार्सापण में चन्द्रगुप्त का क्रय किया
- चन्द्रगुप्त की शिक्षा तक्षशिला में हुई ।
- ब्राह्मण साहित्य में इन्हे (मौर्यो को) शूद्र कहा है
- जैन तथा बौद्ध साहित्य-क्षत्रिय
- रोमिला थापर-वैश्य
- विशाखदत्त की पुस्तक मुद्राराक्षस में इन्हे वृषल कहा है । वृषल का अर्थ -''निम्न जाति'' सर्वाधिक मान्य मत-क्षत्रिय

1. **चन्द्रगुप्त मौर्य :- (322 B.C - 298 B.C.)** माता-मूर (मौर्य)

यूनानियों ने चंद्रगुप्त मौर्य को सेण्ड्रोकॉट्स कहा है । इस नाम की पहचान सर्वप्रथम विलियम्स जॉन्स ने की ।

- 305 B.C में सेल्युकस निकेटर को पराजित किया
- एप्पियानस इसका उल्लेख करता है ।
- स्ट्रेबो - दोनो के मध्य संधि हुई इसका उल्लेख करता है ।
- चन्द्रगुप्त का विवाह हेलन (सेल्यूकस की बेटी) से हुआ । मौर्य ने बदले में सेल्यूकस को 500 हाथी दिये ।
- सेल्युकस निकेटर का दूत मैगस्थनीज तात्कालिक भारत की जानकारी देता है ।
- मैगस्थनीज की पुस्तक - इण्डिका (ग्रीक)
- एरियन की पुस्तक - इण्डिका (अंग्रेजी)
- प्लिनी की पुस्तक - नैचुरल हिस्टोरिका (लैटिन भाषा में)
- टॉल्मी की पुस्तक - ज्योग्राफी (ग्रीक)
- अज्ञात - पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (लाल सागर) (ग्रीक)
- 298 B.C भद्रबाहु के साथ दक्षिण भारत में श्रवण बेलागोला गया । संलेखना/सन्थारा द्वारा प्राण त्याग दिये । (कर्नाटक)
- चंद्रगुप्त मौर्य को प्रथम साम्राज्य निर्माता शासक कहते है ।

2. **बिन्दुसार :-** (298-273 B.C.)

- प्रथम सिजेरियन बेबी ।
- तिब्बत के इतिहासकार तारानाथ ने इसे महान् शासक बताया है ।
- साहित्य में इसे ''अमित्रघात'' कहा है ।
- यूनानी इतिहासकार इसे ''अमित्रोचेडस्'' कहते है
- जैन ग्रंथों में इसे सिंहसेन कहा है ।
- दो दूत इसके दरबार में आये :- 1. डाइमेकस (सीरिया) 2. डायनोसियस (मिस्र)
- इसके काल में दो विद्रोह हुए तक्षशिला एवं अवंती ।
- सीरिया के शासक एन्टीयोकस से 3 वस्तुओं की मॉग की

I. मीठी शराब (भेजेगे)

II. सूखे अंजीर (मेवे)

III. दार्शनिक (मना किया)

– यह आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था ।

3. अशोक :– (273 BC से से 232 BC)

माता - सुभद्रांगी (धर्मा)

पत्नी - देवी   अन्य पत्नी- कारुवकी

पुत्र - महेन्द्र   पुत्र → तिवर   } इनका अभिलेख मिलता है ।

पुत्री - संघमित्रा

– 273 ई.पू. सत्ता ग्रहण की । देवनावयं पियदसि (देवों का प्यारा)
– 269 ई.पू. राज्याभिषेक
– बौद्ध साहित्य के अनुसार इसने 99 भाईयों की हत्या कर दी ।
– शासन के आठवें वर्ष में कलिंग पर आक्रमण किया ।
– कलिंग का शासक संभवतः नन्दराज था । इस युद्ध में 1 लाख लोग मारे गये । 1.5 लाख लोगों को युद्धबंदी बनाया गया । (अशोक के 13 वें अभिलेख से जानकारी)
– यह जानकारी खारवेल के हाथीगुफा अभिलेख से मिलती है ।
*खारवेल चेदी (छेदी) वंश का शासक था ।
– इस युद्ध के बाद अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया अशोक ने युद्ध घोष के स्थान पर धम्म घोष को अपनाया ।

अशोक ने राजा अभिषेक के 10 वें वर्ष बोध गया की यात्रा की 20 वें वर्ष लुम्बिनी की यात्रा की ।

लुम्बिनी यात्रा की जानकारी अशोक के रुम्मीनदेई अभिलेख में मिलते है । वहां की जनता का कर कम कर 1/6 से 1/8 किया ।

रुम्मीनदेई अभिलेख को अशोक का आर्थिक देई घोषणा पत्र कहते है ।

अशोक सेव धर्म का अनुयायी था । मोगलीपुततीस्स ने इसे बौद्ध धर्म मे परिवर्तित किया । कुछ बौद्ध ग्रंथ निग्रोथ से प्रभावित होकर अशोक द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने की बात करते है ।

सिंहली धर्म ग्रंथ अशोक के उपगुप्त द्वारा बौद्ध धर्म में दिक्षित होने की बात करते है ।
अशोक के बौद्ध धर्म ग्रहण करने की जानकारी भाब्रुक अभिलेख मिलती है ।

अशोक ने शासन के 14 वें वर्ष में महाधम्मपात्रों की नियुक्ति की थी ।

अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघ मित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा था ।

अशोक के अभिलेख :–

- शिलालेख
  - वृहत
  - लघु
- स्तम्भ लेख
  - वृहत
  - लघु
- गुफालेख

– टिफेन्थेलर ने 1750 में खोज की ।

– 1837 में जेम्स प्रिंसेप इनको पढने में सफल रहा

– भाषा   प्राकृत या मगधी
     यूनानी भाषा (ग्रीक भाषा)

लिपियां :–   ब्राह्मी लिपि
खरोष्ठी लिपि
अरामेइक लिपि
यूनानी लिपि

शर-ए-कुना अभिलेख (काबुल के पास) से 2 लिपियों अरामेइक, ग्रीक एवं ब्राह्मी लिपि के लेख मिले है

1. वृहत शिलालेख :– इनकी संख्या 14 है तथा 8 स्थानों से प्राप्त होते है

1. शाहबाजगढी } पाकिस्तान (खरोष्ठी लिपि में)
मानसेहरा

2. सोपारा (महाराष्ट्र)
3. जूनागढ (गुजरात)

4. धौली } ओडिसा
5. जौगड

6. कालसी (उत्तराखण्ड)
7. एर्रगुडि (आंध्रप्रदेश)